Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय – प्रथम
शोध परिचय

1.0. विषय प्रवेश :–

शिक्षा से तात्पर्य व्यक्ति में अन्तर्निहित शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठता के प्रकाश में लाना है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्तित्व का विकास करके उसे संपूर्णता प्रदान करता है विद्यार्थी जीवन में शैक्षिक उपलब्धि उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। भारत जैसे विकासशील देश में विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों में रूचि न होने के कारण कई विद्यार्थ शिक्षा पूर्ण किए बिना ही विद्यालय छोड देते हैं या अपनी कक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाते हैं जिसके कई व्यक्तिगत कारण जैसे बुद्धिमता की कमी, नीरसता, स्वतंत्र विचार की कमी अपने विचारों के व्यक्त न कर पाना है।

शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य देश लिए उत्पादक व नेतृत्वशील व्यक्तियों का निर्माण करना है। परन्तु व्यक्तित्व में कमी तथा उसका समूचित रूप से विकास न होने के कारण वे अनेक समस्याओं का सामना करते हैं। आंकड़ों को देखने पर ज्ञात होता है कि 1950–1960 के मध्य प्राथमिक स्तर पर शिक्षा पूरी न करने वाले तथा अनुतीर्ण विद्यार्थियों का 65.3 प्रतिशत थ वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक शिक्षा में विद्यालय छोडने तथा अनुतीर्ण विद्यार्थियों क प्रतिशत 52.79 प्रतिशत है। इसका अर्थ यह है कि यदि कक्षा एक में 100 विद्यार्थी प्रवेश लेते है तो कक्षा आठ में केवल 47 विद्यार्थी ही पहुंच पाते है। इससे प्राथमिक शिक्षा में विद्यालय छोडने वाले विद्यार्थियों की समस्या का भयावहता का ज्ञान होता है। इस समस्या की पृष्ठभूमि में जाने पर ज्ञात होता है कि इसके सूत्र व्यक्तित्व में कमी है जिससे वांछित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में असफल रहे। अनेक शोधों में यह देखा गया है कि जिन विद्यार्थियों की बुद्धिमत्ता उच्च होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है जबकि निम्न बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है। इस प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में व्यक्तित्व एक महत्वपूर्ण कारक है।

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि का संबंध जानने से पूर्व व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ जानना आवश्यक है।

1.1 व्यक्तित्व का अर्थ :–

व्यक्तित्व को निश्चित रूप में परिभाषित करना कठिन कार्य है। कैटल, आलपोर्ट, युंग, ड्रेवर आदि ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

समान्यतः व्यक्तित्व का अंग्रेजी "Personality" का अनुवाद है। जो लेटिन भाषा का शब्द ''परसोना'' से बना है, जिसका अर्थ है ''नकाब'' या 'मास्क'' जिसे नाटक करते समय पहनते हैं। इस शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए व्यक्तित्व को बाहरी वेशभूषा या दिखावे के आधार पर परिभाषित किया है। कुछ प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

कैटल के अनुसार व्यक्तित्व :–

''व्यक्तित्व व्यक्ति की सभी प्रकार की जन्मजात प्रकृति, आवेगो, प्रवृत्तियों, इच्छाओं एवं अनुभवों के द्वारा अर्जित बातों का योग है।''

आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व :–

''व्यक्तित्व व्यक्ति की उन मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके संपूर्ण समायोजन का निर्माण करती है।

इस प्रकार व्यक्तित्व अपूर्व और विशिष्ट होता है, प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार समायोजन, आदतें अद्‌भुत तथा अनूठी होती है। इसमें व्यक्ति के ज्ञानात्मक, भावात्मक पक्ष सम्मिलित होता है।

1.2 शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ :–

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय बालक के सीखने के पश्चात् उसके ज्ञान एवं समझ से या विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं से हैं जो छात्र सफलताओं या उपलब्धि के साथ प्राप्त करता है।

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

1.3 व्यक्तित्व विशेषक का अर्थ :–

वे बीज तत्व, जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है, व्यक्तित्व विशेषक या शीलगुण कहलाते हैं इन्ही शीलगुणों या विशेषकों के आधार पर एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति में अन्तर किया जा सकता है। ये गुण आन्तरिक या बाह्य दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

गैरेट के अनुसार :–

''व्यक्तित्व के गुण व्यवहार करने की निश्चित विधियां है, जो प्रत्येक व्यक्ति में बहुत कुछ स्थायी होती है। व्यक्तित्व के गुण व्यवहार में बहुसंख्यक स्वरूपों का वर्णन करने की स्पष्ट और संक्षिप्त विधियां है।

1.4 व्यक्तित्व विशेषक का महत्व :–

प्रत्येक व्यक्ति में व्यक्तित्व के कम या अधिक गुण अवश्यक होते है। वे एक दूसरे से एक विशिष्ट प्रकार से सम्बन्धित होकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और व्यक्तित्व को एक दूसरे से भिन्नता प्रदान करते हैं।

गार्डनर व मर्की के शब्दों में :–

''व्यक्ति के गुण हमें दूसरों को और अपने को समझने की भविष्यवाणी की क्षमता प्रदान करते हैं कि, हममे से प्रत्येक कौन क्या करेगा।''

1.5 व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध :–

व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण विशेषक जैसे बुद्धिमत्ता, निष्क्रियता, उत्तेजना, इच्छाशक्ति, दृढनिश्चयी शर्मीला, निडरता, आत्मविश्वास आदि शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। अपने अध्ययन में निष्क्रिय रहने वाले बालक विषयों को एकाग्रचित होकर नही पढ़ता है। जिससे वह अपनी शैक्षिक उपलब्धि में पिछड जाता है जबकि इसके विपरीत सक्रिय तथा एकाग्रचित विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है। इसी प्रकार शर्मीले बालक कायर, असामाजिक तथा चिन्तित रहते हैं जिसका कारण परिवार में समस्या, पालक का ध्यान न देना, सामाजिक वातावरण

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

बंधनयुक्त होना आदि हो सकता है। विशेष कर बालिकाओं के संदर्भ में रूढिवादी मानसिकता के कारण उन्हें बोलने के कम अवसर प्राप्त होते हैं जिस कारण वह शर्मीली होती है। अध्ययन में यह पाया गया कि शर्मीलेपन का शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वे विद्यार्थी जो कक्षा में शर्मीलें होते हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है। जबकि साहसी बालकों के साथ ऐसा नही होता है वे कक्षा में तुलनात्मक रूप से अच्छी उपलब्धि प्रदर्शित करते हैं। शर्मीले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न होने के कारण झिझक के कारण कक्षा में शिक्षक से विषय संबंधी कठिन अवधारणाओं का समाधान न होना है जबकि साहसी बालक जो शर्मीले नहीं होते हैं कक्षा में विषय संबंधी समस्याओं का समाधान कर लेते हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।

इसी प्रकार निम्न अटल शक्ति वाले बालकों में इच्छाशक्ति के अभाव में शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न होती है क्योंकि उनमें पढ़ने की लगन कम होती है। जबकि उच्च अटल शक्ति वाले बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। अपनी उच्च अटल शक्ति के कारण वे किसी भी कार्य को प्रतिबद्धता के साथ करते हैं जिससे शैक्षिक उपलब्धि भी सम्मिलित है।

हम देखते हैं कि इस प्रकार व्यक्तित्व के विभिन्न कारकों या कक्षो कें साथ शैक्षिक उपलब्धि का घनिष्ठ संबंध होता है।

1.6 व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक :–

व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करने वाले कारकों में कुछ कारक रचना संबंधी तथा कुछ पर्यावरण सम्बंधी है। उन अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर सिद्ध किया कि व्यक्तित्व के विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव अनिवार्य रूप से पड़ता है। मानसिक योग्यता भी व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त व्यक्तित्व के निर्माण को प्रभावित करने वाले कारकें मं दैहिक प्रवृतियां, विशिष्ट रूचियां, भौतिक वातावरण, परिवार विद्यालय, समाज, धार्मिक स्थान आदि है।

5.1.7 शोध की आवश्यकता व महत्व :–

समाज की प्रगति हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि समाज के प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व का समुचित विकास हो। शिक्षक के लिए छात्र का व्यक्तित्व अत्यधिक महत्व रखता है। शिक्षक

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

छात्र के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को जानकर उसके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह छात्र के गुणों को प्रोत्साहित करके तथा अवगुणों को कम करने में योगदान देकर उसकी समस्याओं को हल कर सकता है तथा उसे एक संपूर्ण मानव बनने में सहायता कर सकता है। इसी प्रकार वह छात्र के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन कर प्रभावित करने वाले सकारात्मक कारकों को बढ़ावा देकर उसकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में मदद कर सकता है। इस प्रकार व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि दात्र जीवन के अभिन्न पक्ष है जो छात्र की आधार शिला होती है। तथा इस हेतु उसका अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होती है।

1. भारत में हुए व्यक्तित्व पर शोध कार्य :–

1. आचार्य पी. (1991) मिलान चित्र परीक्षण के व्यक्तित्व सम्बंध : एक अध्ययन।
2. बाजपेयी सुनील (1998) आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिंग, आयु, सामाजिक आर्थिक स्तर, जाति आदि के सम्बंध में व्यक्तित्व अध्ययन।
3. के. माधवीलता, एल, देवी उमा, (1998), आन्ध्रप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के व्यक्तित्व के पक्षों का अध्ययन।
4. मिश्रा बी.सी. (1998), आश्रम तथा नान आश्रम विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।
5. देवी सरिता, मयूरी के (2003), आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि में व्यक्तित्व कारकों का योगदान।

2. विदेशों में हुए व्यक्तित्व पर शोध कार्य –

1. बुस, ए.एच. ,प्लोमिन आर. (1984), बाल्यावस्था में विकसित व्यक्तित्व विशेषकों का अध्ययन।
2. एसेनाडाक, जे.बी, (1969) दो विभिन्न प्रकार की व्यक्तित्व में शर्मीलापन एक सामान्य गुण।

3. चीफ जे. एम. ब्रिग्स एस.आर. (1994), शर्मीलापन व्यक्तित्व विशेषक के रूप में।

4. क्रोजियर, डब्ल्यू. आर. (2001) शर्मीलापन को समझना।

उपरोक्त वर्णित सभी शोध व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को लेकर किए गए परन्तु इन शोध में **''कक्षा छ' के विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''** नहीं किया गया। अतः इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए **''कक्षा छः के विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व व्यक्तित्व विशेषकों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''** लघु शोध हेतु किया गया।

Regional Institute of Education
LIBRARY

1.8 शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व विशेष्कों तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन करना।
2. छात्र तथा छात्राओं के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

1.9 शोध के चर :– प्रस्तुत अध्ययन में शोध चर निम्नलिखित है।

1. स्वतन्त्र चर – व्यक्तित्व विशेषक

2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

3. उपचर – लिंग (छात्र–छात्राएं)

1.10 शोध की परिकल्पनाएं :–

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएं निम्नलिखित है।

1. विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबन्ध नहीं है।

2. छात्र तथा छात्राओं के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों में सार्थक अंतर नहीं है।

3. विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

1.11 शीर्षक में प्रयुक्त चरों की व्याख्या :–

1. **व्यक्तित्व** :– व्यक्तित्व व्यक्ति की सभी प्रकार की जन्मजात, प्रकृति, आवेगो, प्रवृत्तियों, इच्छाओं एवं अनुभवों के द्वारा अर्जित बातों का योग है। यह अपूर्ण और विशिष्ठ होता है गतिशील होता है।

2. **व्यक्तित्व विशेषक** :– वे गुण या तत्व जिनसे मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण होता है। तथा दो व्यक्तियों में भिन्नता होती है।

3. **शैक्षिक उपलब्धि** :– छात्राओं की निरन्तर विकसित योग्यता का मापन उनकों प्रगति देने के लिए आवश्यक हो जाता है। छात्रों में निश्चित समय में कितना ज्ञान किस रूप में प्राप्त किया है, जीवन की परिस्थितियों में उसे कहा तक स्थानान्तरित किया है। आदि की जांच शैक्षिक उपलब्धि के माध्यम से की जाती है।

1.12 शोध की परिसीमाएं :–

प्रस्तुत शोध की परिसमीमाएं निम्नलिखित है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल भोपाल जिले के शहरी क्षेत्र तक ही सीमित है।

2. प्रस्तुत अध्ययन केवल उच्च प्राथमिक स्तर तक ही सीमित है।

3. प्रस्तुत अध्ययन केवल शासकीय विद्यालयों को ही चयनित किया गया।

4. प्रस्तुत अध्ययन केवल बालक–बालिकाओं के चयनित व्यक्तित्व विशेषक तथा शैक्षिक उपलब्धि तक ही सीमित है।

------- 0 -------